आनंद-पत्र

मेरे प्रिय,
प्रेम।

अस्तित्व आनंद-धर्मा है—आनंद स्वरूप है—आनंद अणुओं से ही निर्मित है।
लेकिन, मनुष्य-मन की आविष्कार की क्षमता भी अनंत है!
जो नहीं है—उसका भी वह आविष्कार कर लेता है!
दुख नहीं है—सुख भी नहीं है; पर मनुष्य-मन दुख-सुख में ही जीता है।
नरक नहीं है, पर मन उसे निर्मित करता है।
स्वर्ग स्वप्न है, पर मनुष्य-मन उसे सत्य की भांति देखता है।
और जो है—जो सदा है—मन उसे देखता ही नहीं है; क्योंकि उसके दर्शन में मन की मृत्यु है।
मन का जीवन है द्वैत।
अद्वैत है उसकी मृत्यु।
और, जो है—वह अद्वैत है।
सुख-दुख में है द्वैत।
स्वर्ग-नरक में है द्वैत।
आनंद है अद्वैत।
मोक्ष है अद्वैत।
इसलिए, जहां भी हो द्वैत, वहां सावधान रहें—वहीं दुर्घटना होती है।
और, अद्वैत को हर द्वैत की स्थिति में स्मरण करते रहें; क्योंकि वहीं मुक्ति का द्वार है।
निश्चय ही वह मुक्ति मन की मुक्ति नहीं है—वह मुक्ति है मन से मुक्ति।
और, जो मन से मुक्त हुआ, वह अस्तित्व में प्रवेश कर जाता है।
या कहें आनंद में।
या कहें मोक्ष में।
या कहें ब्रह्म में।

— ओशो
प्रेम की झील में अनुग्रह के फूल

संपादकीय

मुहब्बत का पैगाम खेल-खेल में

1 अप्रैल के दिन दुनिया में लोग एक-दूसरे के साथ खूब मजाक करते हैं—झूठ को सच की भांति परोस कर लोगों को बुद्धू बनाने का मजा लेते हैं। यह वे सब अपने मित्रों, परिचितों और परिजनों के साथ करते हैं। इसलिए 1 अप्रैल को कही गयी बातों को गंभीरता से न लेने का प्रचलन है।

इसलिए, जब 2000 में हमने ओशो वर्ल्ड गैलेरिया के शुभारंभ के लिए 1 अप्रैल का निमंत्रण दिया तो बहुत से लोग ये समझे कि कुछ शुरू नहीं हो रहा है, सिर्फ मजाक होगा। हमने कहा कि हम मजाक को बहुत महत्व देते हैं, आप आकर देखना। और हमने यह ओशो ही से तो सीखा है कि जीवन को बहुत गंभीरता से नहीं लेना चाहिए; जीवन को लीला समझो। जीवन को हल्के-फुल्के रह कर जियो। ध्यान को भी हसंते-खेलते करो।

1 अप्रैल 2000 को ओशो वर्ल्ड गैलेरिया की कुछ ऐसी ही शुरुआत हुई। बीच बाज़ार में साहित्य की उपलब्धि और प्रतिदिन ओशो की वाणी के साथ श्रवण-ध्यान ओशो की ज़ोरबा दि बुद्धा, नये मनुष्य की जीवन-दृष्टि का जीवंत-उदाहरण खड़ा हो गया। गैर-गंभीरता और खेल-खेल में। और राजधानी के आधुनिक शॉपिंग मॉल में होना बहुत उपयोगी भी साबित हुआ—ओशो के सर्वसुलभ होने का एक नया आयाम खुला। इसके माध्यम से लोगों को पूरे विश्व में हो रहे ओशो के कार्य की जानकारी मिली—देश भर के केन्द्रों के द्वारा आयोजित ध्यान-कार्यक्रमों में सम्मिलित होने के लिए एक स्वागत-कक्ष बन गया है।

उसके एक वर्ष बाद इसी दिन को ओशो वर्ल्ड पत्रिका का प्रथम अंक प्रकट हुआ और देखते ही देखते यह पत्रिका देश के कोने-कोने में उपलब्ध हो गयी। सुंदर कलेवर में ओशो के चुने हुए प्रवचनों के साथ देश भर में होने वाले ध्यान-कार्यक्रमों की जानकारी भी सर्वसुलभ हो गयी। खूब जोरों से देश के विभिन्न भागों में ध्यान की गतिविधियों में अभिवृद्धि हुई है। गत चार वर्षों में इतने ध्यान शिविर हुए जितने पहले कभी न हुए थे। हर सप्ताह कहीं न कहीं ध्यान शिविर है—एक दिवसीय, तीन दिवसीय, पांच दिवसीय.. तथा और बड़े-बड़े ध्यान शिविर।

सभी ओशो प्रेमी यही तो चाहते हैं कि उनके क्षेत्रों में ध्यान केन्द्र खुलें, उनके माध्यम से ध्यान के सशक्त आयोजन हों और उनकी सूचना सर्वसुलभ हो। ओशो वर्ल्ड पत्रिका प्रारंभ से यह भूमिका बखूबी आनंद से निभा रही है। ध्यान कार्यक्रमों की सूचनाएं बहुमूल्य होती हैं और वे समय पर सबको मिलें तो आयोजन प्राणवान हो जाते हैं। ऐसे आयोजनों को मुझे तथा कुछ मित्रों को घूम-घूम कर प्रत्यक्ष देखने के अवसर मिले हैं और ओशो की कार्य-लीला को निकटता से देखा है : यह कार्य निश्चित ही बड़े पैमाने पर होता दिखाई देता है।

उदाहरण के लिए, पिछले दिनों दो बार जबलपुर जाना हुआ। इस शहर के भंवरताल उपवन को ओशो के संबोधि-विस्फोट का साक्षी होने का सौभाग्य मिला था—21 मार्च, 1953 को। यहां ओशो अमृतधाम कम्यून है—बहुत सुंदर है और निरंतर विकासमान है। स्वामी आनंद विजय इसे बहुत विस्तार दे रहे हैं। कम्यून के पीछे और काफी बड़ी ज़मीन उपलब्ध कर ली गयी है तथा भेड़ाघाट के निकट भी बहुत बड़ी ज़मीन पर कार्य शुरू हो गया है। इस लंबी-चौड़ी मनोरम जगह पर ध्यानी-संन्यासी मिल कर परस्पर-सहयोग द्वारा सृजनात्मक कम्यून जीवन जी सकेंगे।

अन्य स्थानों पर और भी संन्यासी मित्र ऐसी व्यवस्था कर रहे हैं जिसकी जानकारी आपको ओशो वर्ल्ड पत्रिका के माध्यम से समय-समय पर मिलती रहेगी।

पत्रिका के चार वर्ष पूरे होने के समय पर इसकी सशक्त भूमिका से जो देश भर में कार्य-विस्तार हुआ है वह स्मरणीय है। आप सब मित्रों का सहयोग सर्वथा सराहनीय है। अपने सभी मित्रों-परिचितों को इसके सदस्य बनाएं। अंग्रेज़ी-भाषी मित्रों को ओशो वर्ल्ड न्यूज़ की जानकारी दें। यह हम सबका आनंद है। आनंद बांटें और बांटने से आनंद निरंतर बढ़ता है। ओशो का 'पैगाम मुहब्बत है, जहां तक पहुंचे।'

— स्वामी चैतन्य कीर्ति